IX हड़प्पा शहरो की गतिविधियां

V.V.I.

(i) बालुचिस्तान समुद्रतट के पास बालाकोट और सिन्ध में चान्हुदड़ो सीपीशिल्प चुडीयों के लिए प्रसिद्ध थे।

(ii) लोथल और चान्हुदड़ो के लाल पत्थर (कार्नेलियन Carnelian) और गोमेद के मनके बनाये जाने के लिए प्रसिद्ध थे।

(iii) चान्हुदड़ो के "वैडूर्यमणी" के कुछ अधबने मनके इस बात की ओर संकेत करते है कि हड़प्पा निवासी दूर दराज स्थानों से बहुमुल्य पत्थर आयात करते थे और आपकोण करके उन्हे बेचते थे।

(iv) मोहनजोदड़ो में पत्थर को चिकनाई करने वाले कुम्हार, ताम्बे और कांसे के शिल्पकार, ईंट बनाने वाले, मनके बनाने वाले इत्यादि हस्त कौशल के निपुण लोगों के उपस्थिति के प्रमाण पाये गये है।

X कच्चे माल के स्रोत

(1) हड़प्पा सभ्यता की विभिन्न बस्तियों में खुदाई के द्वारा बहुत संख्या में चुड़ीया, मनके, मिट्टी के बरतन और विभिन्न प्रकार के ताम्बे, कांसे और पत्थर की वस्तुए पायी गयी है हड़प्पा सभ्यता की बस्तियो में पायी

गई अनेकों प्रकार की वस्तुएं इस बात की ओर संकेत करती है कि वे अनेक प्रकार की धातुओं और बहुमूल्य पत्थरों का प्रयोग करते थे जो इस क्षेत्र में उपलब्ध नही थे। ये अमीर लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये एक विस्तृत विनिमय तन्त्र की संकेत करती है।

(I) ताम्बा → (क) वे राजस्थान से खेत्री के क्षेत्र से ताम्बा प्राप्त करते थे

(ख) मध्यवर्ती राजस्थान में जोधपुर, बागोर तथा गणेश्वर बस्तियाँ भी हड़प्पा सभ्यता के बस्तियों के समकालीन मानी जाती है सम्भवतया हड़प्पा सभ्यता के लिए कच्चे ताम्बे का स्रोत रही होगी

Note गणेश्वर के लोग खानाबदोशी चरवाहे एवं शिकार संग्रहकर्ता, दोनो होकर तरह जीवन यापन करते थे।

Note - गणेश्वर से 400 से अधिक ताम्बे के तीर शीर्ष, पश्चात मछली पकड़ने के कांटे और 58 ताम्बे की कुल्हाड़ीयां पायी गयी है।

(ग) – शायद वे लोग ताम्बा बालुचिस्तान और उत्तरी पश्चिमी सिमांत से भी प्राप्त करते थे।

(II) सोना — (क) सोना सम्भवतः कर्नाटक के कोलार क्षेत्र से प्राप्त करते थे कश्मीर से भी सोना प्राप्त होता होगा।

(ख) राजस्थान के जैपुर और शिरोही, पंजाब के हजरा, कांगड़ा और झंग तथा काबुल और सिन्धु नदियों के किनारे सोने के मुलमों के प्रमाण मिले है।

(IV) चाँदी — चाँदी शायद अफगानिस्तान और इरान से आयात किया जाता होगा

(V) सिसा → पंजाब और बालुचिस्तान से थोड़ी मात्रा में सीसा प्राप्त करते होंगे लेकिन हड़प्पा वाली सीसा मुख्य रूप से कश्मीर और राजस्थान से प्राप्त करते थे।

(VI) वैदूर्यमणी (लाजवर्दमणी) – यह एक किमती पत्थर है जो अफगानिस्तान के बदक्शां में पाया जाता है।

Note → बदक्शां के पास शोरतुगई एवं अलतिनदेपे जैसी हड़प्पाकालीन बस्तियों का पाया जाना इस बात के प्रमाणित करती है कि हड़प्पावासी बदक्शां केवल स्रोतों का लाभ उठाते थे।

(VII) फिरोजा और जेड → ये दोनो मध्य एशिया से प्राप्त किये जाते थे।

(VIII) गोमेद, स्लेटम, स्फटीक और लालपत्थर – स्वराष्ट्र और पश्चिमी भारत से प्राप्त करते थे

(IX) समुद्री सीपीयां → गुजरात के समुद्र तट एवं पश्चिमी भारत से प्राप्त करते थे

Scanned with CamScanner

(४) अच्छी किस्म की लकड़ी → ये जम्मु के भाग से प्राप्त करते थे और इन लकड़ियों को नदियों द्वारा उद्योग स्थलों पर पहुँचाते थे।

नोट:— उत्तरी क्षेत्र में हड़प्पा कालीन अवशेष काफी मात्रा में केंद्रित पाये गये हैं यह इस बात की ओर संकेत करता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने दूरस्थ क्षेत्रों में पाये जाने वाले खनिजों का उपयोग करने के लिये | उपनिवेशीकरण | की नीति अपनाई थी जिससे यह भी पता चलता है कि व्यापार और बाहर की बहुमूल्य प्रकार की वस्तुएं प्राप्त करने में हड़प्पा सभ्यता के लोगों की दिलचस्पी थी ऐसा प्रतीत होता है कि व्यापार, विनिमय व्यापारियों का आपसी मामला नहीं था एक प्रशासनिक कार्य कलाप था क्योंकि 500 km क्षेत्र में उपनिवेश स्थापित करना किसी व्यापारी के लिये सम्भव न था। हड़प्पा काल के प्रशासक दूरस्थ प्रदेशों के संसाधनों का नियंत्रण करना चाहते थे

विनिमय व्यवस्था

[I] हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने भारतीय उपमहाद्वीप के भीतर और बाहर अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार का एक वृहद तंत्र स्थापित किया था लेकिन हमें यह जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है कि हड़प्पा सभ्यता और अन्य क्षेत्रों के बीच किस प्रकार की विनिमय व्यवस्था प्रचलित थी लेकिन इतना तो निश्चित कहा जा सकता है कि आदान-प्रदान की प्रक्रिया में विभिन्न समुदाय शामिल हुए होंगे।

[II] उस समय देश के एक बड़े भूभाग में शिकारी संग्रहकर्ता रहते थे कुछ क्षेत्रों में खानाबदोश चरवाहे थे कुछ समुदायों ने कृषि उत्पादन शुरू कर दिया था। इनकी तुलना में हड़प्पा सभ्यता अधिक विकसित थी। हड़प्पा सभ्यता के लोग शिकारी संग्रहकर्ताओं या किसी और समुदायों के क्षेत्रों से खनिज पदार्थ प्राप्त करने के लिए जो तरीके अपनाये होंगे उसका सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता है।

(III) हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ऐसे कुछ क्षेत्रों में अपनी बस्तियाँ बनायी थी जो मूल केन्द्र से काफी दूर थे इसका कारण यह भी हो सकता है कि वे लोग दूर-दराज के विभिन्न समुदाय से कीमती वस्तुएं प्राप्त करते थे या करना चाहते थे

Scanned with CamScanner

परन्तु विनिमय एक नियमित कार्य कलाप नही था बल्कि यह उन समुदायों के मौसमी प्रवास या किसी एक जगह पर एकत्रित होनेपर निर्भर करता था। हड़प्पा सभ्यता के व्यापारी उन स्थानों पर जाते थे जहां वे मौसमी डेरा डालते थे मौसमी प्रवास की प्रक्रिया के दौरान खानाबदोश चरवाहे भी दूर-दराज के क्षेत्र से सामान प्राप्त करते थे फिर भी विनिमय प्रणाली के बारे में हमें बहुत कम जानकारी प्राप्त है। इन खानाबदोश या चरवाहों से हड़प्पा व्यापारियों का सम्बन्ध अप्रत्यक्ष था।

XII हड़प्पा कालीन नगरों के बीच विनिमय प्रणाली -

(I) हड़प्पा सभ्यता के लोगो मे आपसी व्यापार और विनिमय के नियंत्रित करने का प्रयास किया दूर फैली हुई हड़प्पा कालीन बस्तियों में नाप और तौल की व्यवस्था में समरूपता थी

(II) तौल निम्न गुणांकों में (द्विचर) प्रणाली के अनुसार थी —

1, 2, 4, 8, से 64 तक फिर 150 तक और फिर 16 गुणा होने वाले दशमलव 320, 640, 1600, और 3200 इत्यादि तक थे चमकीले पत्थर, चूना पत्थर, सेल खड़ी इत्यादि से बनते थे, और साधारणतया घनाकार होते थे।

[III] लम्बाई के लिए 37.6 CM की एक फुट की इकाई आधारित और एक हाथ की इकाई लगभग 51.8 से 53.6 CM तक होती थी।

(IV) नाप और तौल की समरूप व्यवस्था केन्द्रीय प्रशासन द्वारा हड़प्पा सभ्यता के लोगों में आपसी तथा अन्य लोगो के साथ विनिमय को व्यवस्थित करने की प्रयास की ओर इसारा करती है।

(V) हड़प्पा सभ्यता की बस्तियों में काफी संख्या में मुहरे और मुद्रांकन पाये गये है ये मुहरे और मुद्रांकन दूरस्थ स्थानो को भेजे जाने वाले उत्पादो के उच्च स्तर और स्वामित्व की ओर संकेत करते है। इनका प्रयोग व्यापारिक गतिविधियों में होता था। इस बात की पुष्टी इस तथ्य से होती है कि बहुत से मुद्रांकनो मे पिछे की ओर रस्सी और चटाई की निशान है इनमे पाये जाने वाले चिन्हो से पता चलता है कि ये मुद्रांकन तिजारती माल माल के ठप्पे की तरह प्रयोग में लाये जाते होंगे।

[V] लोथल के गोदाम में वायु संचालन के रास्ते में राख में अनेक मुद्रांकन पाये गये है। ये सम्भवतया आयातित माल के गट्ठरो को खोलने के बाद फेंक दिये जाते होंगे इन मुहरों पर विभिन्न जानवरों की आकृतियाँ भी चित्रित है और इनपर जो लिपि उत्कीर्ण है

Scanned with CamScanner

वह अभी तक नहीं पढ़ी जा सकी है ऐसा लगता है कि कुछ स्थानों के साथ व्यापार विनिमय में इसका प्रयोग होता था।

Scanned with CamScanner